

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चाशीतितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে পঞ্চাশীতিতমং দশকম্ ॥

জরাসন্ধরধরণনং, রাজসূয়রণনং চ

ততো মগধভূভূতা চিরনিরোধসঙ্কল্পশিতং
শতাষ্টকযুতায়ুতদ্বিতযমীশ ভূমীভূতাম্।
অনাথশরণায় তে কমপি পুরুষং প্রাহিণো -
দযাচত স মাগধক্ষপণমের কিং ভূযসা ॥ 85.1 ॥

যিযাসুরভিমাগধং তদনু নারদোদীরিতা -
দ্যুধিষ্ঠিরমখোদ্যমাদুভযকার্যপর্যাকুলঃ।
বিরুদ্ধজযিনোহধ্বরাদুভযসিদ্ধিরিত্যুধ্বরে
শশংসুষি নিজৈঃ সমং পুরমিযেথ যৌধিষ্ঠিরীম্ ॥ 85.2 ॥

অশেষদযিতায়ুতে ংরযি সমাগতে ধর্মজো
রিজিত্য সহজৈমহীং ভরদপাঙ্গসংর্ধিতৈঃ।
শ্রিযং নিরুপমাং রহন্নহহ ভক্তদাসাযিতং
ভরন্তমযি মাগধে প্রহিতরান্ সভীমার্জুনম্ ॥ 85.3 ॥

গিরিব্রজপুরং গতাস্তদনু দেব যুযং ত্রযো
যযাচ সমরোৎসরং দ্বিজমিষেণ তং মাগধম্।
অপূর্ণসুকৃতং ংরমুং পরনজেন সঙ্গ্রামযন্
নিরীক্ষ্য সহ জিষ্ণুনা ংরমপি রাজযুদ্ধরা স্থিতঃ ॥ 85.4 ॥

অশান্তসমরোদ্ধতং বিটপপাটনাসংজ্ঞযা
নিপাত্য জরসস্সুতং পরনজেন নিষ্পাটিতম্।

रिमुच्य नृपतीन् मुदा समनुगृह्य भक्तिं परां
दिदेशिथ गतस्पृहानपि च धर्मशुश्रूष्ये भूरः ॥ 85.5 ॥

प्रचक्रुषि युधिष्ठिरे तदनु राजसूयाध्वरं
प्रसन्नभृतक्रीडरसकलराजकर्याकुलम्।
रमपयि जगत्पते द्विजपदारनेजादिकं
चकथं किमु कथ्यते नृपरस्य भाग्योन्नतिः ॥ 85.6 ॥

ततः सरनकर्माणि प्ररमग्र्यपूजारिधिं
रिचार्य सहदेवरागनुगतः स धर्मात्प्रजः।
र्यधत्त भरते मुदा सदसि रिरुभूतात्प्रने
तदा ससुरमानुषं भूरनमेर तृप्तिं दधौ ॥ 85.7 ॥

ततः सपदि चेदिपो मुनिन्पेषु तिष्ठत्प्रहो
सभाजयति को जडः पशुपदुर्दुरटं रटुम्।
इति ररयि स दुर्रचोरिततिमुद्रमन्नासना -
दुदापतदुदायुधः समपतन्नमुं पावराः ॥ 85.8 ॥

निरार्य निजपङ्कगानभिमुखस्य रिरुषिण -
श्रुमेर जहृषे शिरो दनुजदारिणा स्वारिणा।
जनुश्रितयलक्कया सततचित्तया शुद्धधी -
श्रुया स परमेकतामधृत योगिनां दुर्लभाम् ॥ 85.9 ॥

ततः सुमहिते ररया क्रतुररे निरुटे जनो
यथौ जयति धर्मजो जयति कृषः इत्यालपन्।
खलः स तु सुयोधनो धुतमनास्सपत्नप्रिया
मयार्पितसभामुखे श्लजलप्रमादप्रमीत् ॥ 85.10 ॥

तदा हसितमुखितं द्रुपदनन्दनाभीमयो -
रपाङ्गकलया रिभो किमपि तारदुज्जुश्रयन्।

धराभरनिराकृतौ सपदि नाम बीजं रूपन्
जनार्दन मरुत्पुरीनिलय पाहि मामामयात् ॥ 85.11 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चाशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥